27 / 05 / 74 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

विश्व-कल्याण के निमित्त बनी आत्माओं के वचन भी सदा कल्याणकारी

➢➢ मैं आत्मा सेण्टर में गॉडली स्टूडेंट के स्वमान में टिककर मीठे-मीठे बाबा की मीठी-मीठी मुरली के मधुर स्वरों को सुन रही हूँ...

➳ _ ➳ मीठी मुरली कानों में मधुरस घोल रही है...

→ मैं आत्मा मुरली सुनते-सुनते चिंतन की धारा में स्वतः बहते जा रही हूँ...

■ चिंतन करते-करते स्वयं की चेकिंग करते जा रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्वयं को साधारण समझ रही थी... परमात्मा ने आकर सत्य ज्ञान देकर मुझे मेरी महानता का परिचय दिया...

→ मैं एक महान आत्मा हूँ... विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ...

■ मेरा हर संकल्प, बोल और कर्म विश्व कल्याण के लिए है...

➳ _ ➳ भगवान ने मुझे स्मृति दिलाई की मेरे मुख से निकला हुआ हर बोल एक महावाक्य है...

→ मैं आत्मा चेकिंग करती हूँ की अमृतवेले से लेकर रात तक क्या मैं आत्मा समर्थ और प्रभावशाली बोल ही बोलती हूँ...?

→ क्या मैं आत्मा विस्तार के बोल, कमजोरी वाले बोल तो नहीं बोलती...?

→ क्या मैं आत्मा इस संगम के अमूल्य समय को व्यर्थ करने वाले, बोल तो नहीं बोलती...?

■ मुझ आत्मा को अपने हर बोल पर अटेंशन रखना है...

■ हर बोल को चेक करके ही बोलना है...

■ मुझे स्वयं के और औरों के प्रति कल्याणकारी बोल ही बोलना है...

➢➢ मुरली सुनने के बाद मैं आत्मा पहुँच जाती हूँ सूक्ष्मवतन प्यारे बापदादा के पास...

➳ _ ➳ बापदादा के मस्तक से, नैनों से प्रेम की दिव्य किरणों का पुंज मुझमें समा रहा है...

→ प्यार के सागर में मैं फ़रिश्ता डूबते जा रहा हूँ...

■ मेरे अन्दर का सारा व्यर्थ का किचड़ा बाहर निकलता जा रहा है...

■ मैं अपने सारे दाग मिटा रहा हूँ...

➳ _ ➳ मैं फ़रिश्ता सत्य बाप के साथ सत्यता के व्रत का प्रतिज्ञा लेता हूं...

→ अपने किए हुए विकर्मों का लेखा जोखा सत्य बाप को सच-सच बता रहा हूँ...

→ बिना कुछ छिपाए बाबा को सबकुछ सुनाकर हल्का हो रहा हूँ...

■ ऐसा कोई भी विकर्म आगे ना करने का और स्वयं को परिवर्तन करने का संकल्प ले रहा हूँ...

➳ _ ➳ बापदादा अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख दिए हैं...

→ बाबा के हाथों से वरदानों की बरसात हो रही है...

→ मैं फ़रिश्ता सर्व वरदानों से भरपूर अनुभव कर रहा हूँ...

→ बाप समान बनने के संस्कारों को स्वयं में ग्रहण कर रहा हूँ...

■ स्वयं को डबल लाइट फ़रिश्ता अनुभव कर रहा हूँ...

➢➢ फिर मैं फ़रिश्ता इस देह में अवतरित होकर अपना पार्ट बजा रहा हूँ...

➳ _ ➳ इस सृष्टि के रचयिता ने श्रेष्ठ भाग्य बनाने की कलम मेरे हाथ में दे दी है...

→ मैं आत्मा मास्टर रचयिता हूँ...

→ मैं आत्मा हर श्वांस, हर संकल्प, हर कर्म, सर्व-शक्तियाँ, सर्व खजाने विश्व सेवा के प्रति लगा रही हूँ...

■ मैं आत्मा स्वयं के साथ-साथ औरों का भी श्रेष्ठ भाग्य बना रही हूँ...

➳ _ ➳ मीठे बाबा ने विश्व कल्याण के श्रेष्ठ कार्य में मुझे अपना साथी बनाया है...

→ मैं आत्मा सदा विश्व कल्याणकारी होने की स्मृति में ही रहती हूँ...

→ बाप समान रहमदिल बन विश्व के सर्व आत्माओं की मनसा, वाचा, कर्मणा सेवा कर रही हूँ...

➳ _ ➳ अब मुझ आत्मा का हर बोल एक महावाक्य है...

→ अब मैं आत्मा सदा योग-युक्त, युक्ति-युक्त, और स्नेह-युक्त और सत्य बोल ही बोलती हूँ...

→ विस्तार और व्यर्थ के बोल नहीं बोलती हूँ...

■ मैं आत्मा स्वयं पर सदा अटेंशन रख कोई भी बोल बोलने के पहले सोचती हूँ की ये दूसरों के कल्याण अर्थ है की नहीं...

■ दूसरों के अकल्याण वा स्वार्थवश बोल कभी नहीं बोलती हूँ...

→ अपनी सत्य दृष्टि, वृत्ति और सत्यता की शक्ति से चारों ओर सत्यता का वायुमंडल बना रही हूँ...

■ सदा इसी स्मृति में रहती हूँ की विश्व का कल्याण कर मुझे विश्व का मालिक बनना है...

■ मैं आत्मा रोज रात को पूरी दिनचर्या का सच्चा-सच्चा चार्ट बाबा को देकर हल्के होकर बाबा की गोदी में सो जाती हूँ...